

इस्लामिक सहयोग संगठन (OIC)

भूमिका

- OIC की विधिवत स्थापना 24 मुस्लिम देशों के राष्ट्राध्यक्षों के रब्बात (मोरक्को) में 1969 में सम्पन्न शिखर सम्मेलन और विदेश मंत्रियों की 1970 में सम्पन्न बैठक के बाद मई 1971 में जेद्दा (सऊदी अरब) में हुई। ओआईसी के चार्टर को 1972 में अपनाया गया। आर्थिक सहयोग में मजबूती लाने के लिये 1981 में एक कार्य योजना को अपनाया गया। 1990 के दशक में इसकी सदस्यता में नियमित रूप से वृद्धि हुई। 28 जून, 2011 को अस्ताना (कजाखस्तान) में 38वीं विदेशमन्त्री परिषद (सीएमएम) बैठक के दौरान संगठन का नाम ऑर्गेनाइजेशन ऑफ द इस्लामिक कॉन्फ्रेंस से बदलकर ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कॉपरेशन किया गया।

उद्देश्य

- 1972 में अपनाये गये चार्टर के आधार पर ओआईसी के उद्देश्य हैं - सदस्य देशों के मध्य आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में इस्लामी एकजुटता को प्रोत्साहन देना तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों से जुड़े सदस्यों के मध्य परामर्श की व्यवस्था करना।
- न्याय पर आधारित अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा विश्व के सभी मुसलमानों की गरिमा, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा करने के लिये उनके संघर्षों को मजबूती प्रदान करना है।
- इस्लामी देशों से संबद्ध महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करने के लिये प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर राष्ट्राध्यक्षों का सम्मेलन बुलाया जाता है। विदेश मंत्रियों का सम्मेलन OIC की प्रमुख संस्था है, जिसमें सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं।

वर्तमान संदर्भ -

- पहली बार किसी भारतीय मंत्री का ओआईसी को संबोधित करना देश की बड़ी कूटनीतिक जीत है। इससे पहले 1969 में इंदिरा गांधी मंत्रिमंडल में वरिष्ठ मंत्री फखरुद्दीन अली अहमद (जो बाद में राष्ट्रपति बने) को रब्बात सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। लेकिन उनके मोरक्को की राजधानी पहुंचने के बाद पाकिस्तान द्वारा आपत्ति किए जाने पर उनसे आमंत्रण वापस ले लिया गया था।
- इस बार ओआईसी ने पाकिस्तान की आपत्ति अनसुनी कर दी। पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने भारत को मिले आमंत्रण पर आपत्ति जताई तथा भारत की भागीदारी के विरोध में पाकिस्तान द्वारा बैठक का बहिष्कार किया गया।
- अपने भाषण में सुषमा स्वराज ने कहा कि भारत में 'बहुत ही कम' मुसलमान चरमपंथी और रूढ़िवादी विचारधारा वाले कुप्रचार के शिकार हुए हैं। उन्होंने जोर दिया कि क्षेत्रों को अस्थिर करने वाले और विश्व को बड़े संकट में डालने वाले आतंकवाद के खिलाफ युद्ध किसी धर्म के खिलाफ नहीं है।

गतिविधियां

इस्लामी सहयोग संगठन की 57 सदस्य हैं, जिनमें से 56 संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्य हैं। 7 देश यथा - आइवरी कोस्ट, गुयाना, मोजाम्बिक, नाइजीरिया, सूरीनाम, टोगो और यूगांडा मुस्लिम बहुल नहीं हैं, लेकिन वे इस्लामी सहयोग संगठन के सदस्य हैं।

OIC में भारत और पाकिस्तान

- OIC पाकिस्तान द्वारा अपने घोषित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक अंतराष्ट्रीय मंच रहा है, भारत के अनुपस्थिति होने के कारण पाकिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ प्रोपगेन्डा करने यथा-कश्मीर, बाबरी ढांचा विवाद, मुसलमानों के कथित मानवाधिकार हनन के साथ भारत के खिलाफ अमर्यादित भाषा का प्रयोग लगातार होता रहा है। यही कारण रहा है कि OIC के सदस्य राष्ट्रों द्वारा पाकिस्तान के प्रस्तावों के जरिए कश्मीर पर जो रुख अपनाया गया वो भारत के पक्ष को बिना जाने-समझे था तथा भारत के खिलाफ था।
- भारत में लगभग 20 करोड़ मुसलमानों की आबादी है इस लिहाज से भारत का अपना पक्ष मजबूत है, भारत के सभी मुसलमानों के तरफ से इस मंच का प्रयोग कर यह संदेश देने की कोशिश की गई कि भारतीय मुसलमान अतिवाद को पसंद नहीं करता और यहां के लोग मेल-जोल, सहिष्णुता और बहु-संस्कृति में विश्वास रखते हैं।

OIC और भारत

- अबू धाबी में एक मार्च, 2019 को आर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कॉन्फरेंस (ओआईसी) के विदेश मंत्रियों की परिषद् के 46वें सत्र के उद्घाटन में भारत पहली बार आमंत्रित मेहमान के तौर पर शिरकत करेगा।
- मेज़बान संयुक्त अरब अमीरात ने भारत को आमंत्रित किया है तो उसकी कई वजहें हैं, पहला कारण यह विश्व में भारत के बढ़ते कद को मान्यता मिल रही है, इसके अलावा भारत की अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपरा है और इस परंपरा में इस्लाम का घटक भी शामिल है।
- संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मंत्री शेख अब्दुल्लाह बिन जायद-अल-नाहयान से आमंत्रण स्वीकार करने के बाद भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा, यह दोनों देशों के बीच गहरी होती रणनीतिक समझदारी का संकेत तो है ही साथ में भारत के 20 करोड़ मुस्लिमों का सम्मान भी है।
- यह आमंत्रण, सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान की भारत और पाकिस्तान यात्रा के ठीक बाद आया है, माना जा रहा है कि सलमान ने भारत और पाकिस्तान के बीच बेहतर संबंधों की वकालत की है।
- भारत ओआईसी देशों की जम्मू-कश्मीर और भारत में मुसलमानों की स्थिति पर भारत विरोधी एवं एक पक्षीय प्रस्तावों की उपेक्षा करता रहा है, हालांकि इसी दौरान पाकिस्तान को छोड़कर भारत ओआईसी के सभी सदस्यों के साथ अपने संबंध बेहतर भी करता आया और धीरे-धीरे कारोबारी संबंधों को राजनीतिक संबंधों से वजनी बनाने में कामयाबी हासिल कर ली।
- ओआईसी सदस्य देशों में सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, ओमान, मोरक्को, ट्यूनिशिया और मिस्र जैसे देशों से भारत के द्विपक्षीय कारोबार और निवेश वाले संबंध काफी बेहतर हैं, खाड़ी देशों में करीब 60 लाख भारतीय रहते हैं और काम करते हैं, जिनमें आधे सऊदी अरब में रहते हैं।
- भारतीयों द्वारा अपने देश में जितना पैसा भेजा जाता है वह भारत के सालाना बजट का करीब 40 फीसदी होता है, जबकि हर साल करीब डेढ़ लाख भारतीय मुसलमान मक्का मदीना की यात्रा करते हैं, खाड़ी देशों के लिए भारत निवेश का बेहतरीन ठिकाना माना जाता है, जबकि ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और इराक भारत को तेल आपूर्ति करने वाले अहम देश हैं।
- भारत ने सूडान, सीरिया, ओमान और कतर में पेट्रोलियम से जुड़े वेंचरों में निवेश किया है ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था को पेट्रोलियम मिलता रहे।
- सीरिया और यमन के बीच जिस तरह से संघर्ष बढ़ रहा है और अरब देश जिस तरह से दो धुरी में तब्दील होते जा रहे हैं, जिसमें एक तरफ तो सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात हैं तो दूसरी तरफ कतर है। हालांकि भारत की नीति अरब देशों के बीच दखल नहीं देने की रही है, लेकिन माना जा रहा है कि राजनीतिक तौर पर आपसी सहयोग लगातार बढ़ रहा है।
- संयुक्त अरब अमीरात के आमंत्रण के मुताबिक भारतीय विदेश मंत्री को ओआईसी के उद्घाटन सत्र में संबोधन भारत के संयुक्त अरब अमीरात के साथ ही नहीं बल्कि इस्लामिक देशों के साथ संबंधों का सूचक है।
- ओआईसी देशों से भारत को जो चुनौती मिल सकती है, उसे संबोधित करने के लिहाज से ये भारत के सामने पहला अवसर होगा, ओआईसी के सदस्य देश कैसे काम करते हैं, इसे एक बार में बदलना तो संभव नहीं होगा लेकिन उस पर असर डाला जा सकता है।
- वर्तमान सरकार और भारत, दोनों के लिए ये किसी जोखिम से कम नहीं होगा, हालांकि इसमें कामयाब होने पर यह जम्मू और कश्मीर की स्थिति और इस्लामिक देशों से भारत के रिश्ते दोनों को प्रभावित करेगा।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न-

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. OIC का उद्देश्य किसी भी रूप में विद्यमान उपनिवेशवाद की समाप्ति तथा जातीय अलगाव और भेदभाव की समाप्ति के लिये प्रयास करना है।
2. OIC मुस्लिम देशों का संगठन न होकर मुसलमानों के पक्ष के समर्थन हेतु समन्वय स्थापित करने के लिए एक मंच है।
3. OIC के संस्थापक सदस्यों में भारत और पाकिस्तान शामिल है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) 2 और 3
- (c) 1 और 3
- (d) उपर्युक्त सभी

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न- OIC में भारत का मुख्य वक्ता के रूप में शामिल होना न सिर्फ भारत के सामरिक-आर्थिक महत्व को दर्शाता है अपितु यह भारत के बहु-सांस्कृतिक स्वरूप का सम्मान भी है। भारत की विश्व में बढ़ती स्वीकार्यता के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।